2 अप्रैल 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिस जन्म के बाद मरण न हो, निर्वाण हो; वह जन्म ही कल्याणस्वरूप है, उसका ही महोत्सव मनाया जाता है।

- पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, पृ. 26

वर्ष : 35, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

(1) अजमेर (राज.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जिन मंदिर ऋषभायतन अध्यात्मधाम में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 मार्च तक प्रथम बार श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक व जैनधर्म के सभी मौलिक सिद्धांतों को बड़े ही सरल ढंग से समझाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

दिनांक 1 मार्च को मन्दिर की परिक्रमा कर भव्य शोभायात्रा सौधर्म इन्द्र श्री लुहाड़िया परिवार, ध्वजारोहण श्री त्रिलोकचंदजी, संजयजी, राजेशजी सोनी परिवार, विधान उद्घाटन श्री अजितकुमार, मनमोहनजी पाटनी परिवार द्वारा एवं मांढने पर जिनवाणी विराजमान करने का कार्य श्री लेखचंद धर्मचन्द गदिया परिवार द्वारा संपन्न किया गया।

इस अवसर पर रात्रि में श्री वीतराग महिला मण्डल द्वारा प्रतिदिन गोष्ठी एवं प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम रखा गया। विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं श्री नवलजी दोशी द्वारा संपन्न कराये गये।

(2) अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव स्थित रत्नत्रय दि. जैन मंदिर में दिनांक 1 से 8 मार्च तक महापर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अरुणजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रेमचंदजी अलवर, पण्डित राजीवजी शास्त्री थानागाजी, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान का आयोजन श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट, दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन द्वारा किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित राकेशजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के सहयोग से संपन्न हुये।

(3) नई दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में श्री 1008 भगवान संभवनाथ गर्भकल्याणक एवं फाल्गुन अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर बाल.ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन द्वारा रचित श्री चौबीस तीर्थंकर मंडल विधान दिनांक 1 से 8 मार्च तक सानंद संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, ब्र. सुनीलजी

(शेष पृष्ठ 2 पर...)

रत्नत्रय विधान संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ आदिनाथ मांगलिक भवन में दिनांक 23 से 25 मार्च तक रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान का उद्घाटन श्री ज्ञानमलजी पाटौदी भीलवाड़ा एवं ध्वजारोहण श्री चांदमलजी लुहाड़िया भीलवाड़ा ने किया।

इस अवसर पर लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया एवं डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों की 80 सीडियाँ नि:शुल्क वितरित की गईं।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न कराये गये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2012 तक श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। इसके माता-पिता के रूप में श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, यज्ञनायक के रूप में श्री महावीरकुमारजी चौधरी भीलवाड़ा एवं महामंत्री के रूप में श्री अमोलकचंदजी चौधरी भीलवाड़ा का चयन हो चुका है। विधिनायक प्रतिमा के भेंट एवं विराजमानकर्त्ता श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा हैं।

प्रशिक्षण शिविर में अवश्य पधारें

सागर (म.प्र.) में रविवार, 13 मई से बुधवार, 30 मई, 2012 तक 46 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित होने जा रहा है।

आप सभी साधर्मी भाई-बहिनों को शिविर में लाभ लेने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है। साथ ही श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अधिक से अधिक संख्या में विद्यार्थी भेजने हेतु अनुरोध है।

आप अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर अवश्य भेजें; ताकि आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। विशेष जानकारी हेतु **सम्पर्क करें** ह्न पीयूष जैन - 9785643202, सोनू शास्त्री - 9785643277

सम्पादकीय – 74

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १२३

विगत गाथा में अन्य अजीव द्रव्यों से असाधारण जीवद्रव्य का कथन किया है।

प्रस्तुत गाथा में जीव द्रव्य का उपसंहार एवं अजीव द्रव्य प्रारंभ करने की चर्चा है। मूल गाथा इसप्रकार है –

एवमभिगम्म जीवं अण्णेहिं वि पज्जएहिं बहुगेहिं।
अभिगच्छदु अज्जीवं णणंतरिदेहिं लिंगेहिं।।१२३।।

(हरिगीत)

पूर्वोक्त अनेक प्रकार से इस तरह जाना जीव को।
जानो अजीव पदार्थ अब जड़ चिन्ह की पहचान से।।१२३।।

पूर्वोक्त प्रकार से अन्य भी बहुत सी पर्यायों द्वारा जीव को जानकर अब ज्ञान से अन्य जड़ लिंगों द्वारा अजीव को जानो।

आचार्य अमृतचन्द टीका में कहते हैं कि व्यवहारनय से जीवस्थान, गुणस्थान, मार्गणा स्थान आदि द्वारा विस्तारपूर्वक कही गई भेदरूप पर्यायों द्वारा तथा निश्चयनय से मोह-राग-द्वेष के अभाव के कारण शुद्ध चैतन्य-परिणमन की बहु पर्यायों द्वारा जीव को जाना।

इसप्रकार जीव को जानकर, अगली गाथाओं में उल्लिखित अचेतन स्वभाव के कारण ज्ञान से भिन्न अर्थात् जड़रूप कहे जानेवाले चिन्हों द्वारा भेद विज्ञान के लिए जीव से संबद्ध या असंबद्ध अजीव को जानो।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

एसैं बहुपर्याय-गत, जीव पदारथ जानि।
सकल अचेतन चिन्ह गत, सब अजीव पहचान।।६७।।

(सवैया इकतीसा)

ऐसैं विवहार करि जीवठान गुणठान,
मारगना आदि भेद, जीवरूप कहे हैं।
निहचै हैं राग-द्वेष-मोह परिनाम नाना,
रूप सो असुद्ध जीव लोक माहिं रहे हैं।।
सुद्ध निहचै सौं सुद्ध सिद्ध-पर्याय रूप,
भूप छहौं द्रव्य विषै मोह थान गहे हैं।
जीव तैं अजीव विपरीत रूप आगै अब,
कहैं हैं मुनीस जातैं आप पर लहे हैं।।६९।।

(दोहा)

सकल वस्तु इहलोक में, जीव अजीव विथार।
जीव कथन पूरा भया, कहत अजीव विचार।।७०।।

कवि हीरानन्दजी के उपर्युक्त काव्यों में जो कहा गया; उसका सार यह है कि व्यवहारनय से जीवस्थान, गुणस्थान, मार्गणास्थान आदि जीव के भेद कहे हैं तथा अशुद्ध निश्चयनय से राग-द्वेष-मोहरूप अनेक अशुद्ध जीव लोक में हैं। शुद्ध निश्चयनय से शुद्ध सिद्ध-पर्याय रूप हैं।

इस लोक में जीव-अजीव का ही विस्तार है। यहाँ तक जीव का कथन पूरा हुआ। अब आगे अजीव की चर्चा करेंगे।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने प्रवचन में कहा है कि इसप्रकार अनेक पर्यायों से आत्मा को जानकर ज्ञान से भिन्न स्पर्श, रस, गंध, वर्णादि चिन्हों से पुद्गलादि पाँच अजीव द्रव्यों को जानो।

ज्ञान-दर्शन आदि से जीव को अन्य अजीव द्रव्यों से भिन्न जानना तथा गुणस्थान, जीवस्थान आदि जीव की अन्य पर्यायों से भी जीवतत्त्व को भिन्न जानना चाहिए।

देखो, समयसार, नियमसार आदि में जीव के अखण्ड स्वभाव की अधिकता बताने के लिए गुणस्थान, जीवस्थान आदि को जहाँ अजीव का परिणाम कहा है, वहाँ पर्याय को गौण करके द्रव्यदृष्टि का विषय बताया है और यहाँ तो अजीव द्रव्यों से भिन्नता बताने के लिए गुणस्थान आदि जीव की पर्यायों से जीव की पहचान कराई है। मिथ्यात्वादि १४ गुणस्थान जीव की पर्याय में होते हैं। वे अजीव के कारण नहीं हैं। त्रिकाली स्वभाव की दृष्टि कराने के लिए उन्हें कर्मजनित कहा है, परन्तु वहाँ तो पर्याय को अन्तर्मुख करके अभेद स्वभाव बताने का अभिप्राय है। यदि पर्याय को ही पराधीन-कर्म के आधीन मान ले तो अन्तर्मुख होकर अभेद स्वभाव की दृष्टि कैसे करेगा; क्योंकि अभेदस्वभाव को दृष्टि में लेने वाली तो पर्याय है। जिसने उसे पर्याय को ही पर के कारण माना, वह जीव पर्याय को अन्तर स्वभाव के सन्मुख नहीं कर सकता। इसलिए नक्की करना चाहिए कि जीव की जितनी पर्यायें हैं, वे सभी जीव के स्वयं के कारण ही हैं।''

इसप्रकार यद्यपि इस गाथा में अजीव द्रव्य की पहचान कराने का संकल्प किया है तथा कहा है कि पिछली गाथाओं में जीव का व्याख्यान विस्तार से हो चुका है, तथापि गुरुदेवश्री को जीवों के कल्याण की भावना विशेष रहती है, अतः उन्होंने अपने व्याख्यान में समयसार, नियमसार आदि का उल्लेख कर कहा कि जीव के अखण्ड स्वभाव बताने के लिए गुणस्थान, जीवस्थान आदि को जहाँ अजीव का परिणाम कहा है वहाँ पर्याय को गौण करके द्रव्यदृष्टि से बताया है और यहाँ इस गाथा में अजीव द्रव्यों से भिन्नता बताने के लिए गुणस्थान आदि को जीव की पहचान कराई है। ●

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

शास्त्री शिवपुरी, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, विदुषी प्रज्ञा दीदी अमायन का समागम प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण श्री जिनेन्द्र मनीषकुमार जैन, फ्रैन्ड्स एन्क्लेव, दिल्ली के करकमलों से हुआ। विधान के मुख्य आयोजनकर्ता श्री विमलकुमारजी जैन एवं श्रीमती कुसुम जैन परिवार दिल्ली थे।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों एवं तीन समय के स्वाध्याय का लाभ मिला। आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की कन्याओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बांसवाड़ा ने संपन्न कराये।

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा –

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि पर दिनांक 17 व 18 मार्च को अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री सतीशजी जैन (एस.सी.जे.) दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में राज. महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ.लाडकुमारी जैन, मुख्य वक्ता के रूप में दैनिक पंजाब केसरी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री स्वदेशभूषणजी जैन व विशिष्ट अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया थे।

कार्यशाला का उद्घाटन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.के. जैन ने किया।

कार्यक्रम के छह सत्रों में श्री प्रवीणचंद छाबड़ा, डॉ. सुशीला पाटनी, श्री मिलापचंद डंडिया, श्री अनिल लोढा, श्री धर्मेश भारती तथा डॉ. संजीव भानावत जैसे वरिष्ठ पत्रकारों ने पत्रकारिता की गहराई में जाकर विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन किया।

कार्यशाला में भाग लेने कोलकाता, नागपुर, इन्दौर, अजमेर, आगरा, उदयपुर आदि स्थानों से लगभग 30 पत्र–पत्रिकाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये।

समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा ने की। संचालन संस्था के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्याध्यक्ष श्री अनूपचंद जैन एडवोकेट ने किया। – **अखिल बंसल**

पंचकल्याणक विधान संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दि. जैन मुमुक्षु आश्रम में दिनांक 8 मार्च को भगवान आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन श्रीमती तिलक लाभचंद आतरदावालों की ओर से किया गया।

इस अवसर पर आचार्य धरसेन महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्रीमती रत्ना जैन (महापौर कोटा) उपस्थित थीं। समारोह की अध्यक्षता श्री सी.एल. प्रेमी (विधायक) ने की।

विधि–विधान के समस्त कार्य श्री रतनचंदजी चौधरी के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

इस प्रसंग पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सारगर्भित प्रवचन का लाभ मिला।

आवश्यकता है

श्री नंदीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना में वार्डन, नंदीश्वर विद्यालय में जैन धर्म पढाने हेतु शिक्षक, कम्प्यूटर शिक्षक एवं कक्षा 6वीं से 12वीं तक पढाने हेतु अन्य विषयों में दक्ष शिक्षक संपर्क करें।

प्रमोद जैन (प्राचार्य) 081200–90066, संतोष वैद्य (अध्यक्ष) 09584586077

अपने बालकों को विरासत में जिनधर्म के संस्कार दीजिये –

बाल शिविर, धार्मिक आयोजन, पारिवारिक प्रसंग आदि में वितरण हेतु सर्वोत्तम उपहार

1. जैन बच्चे सच्चे हम
2. हम होंगे ज्ञानवान
3. मेरा वीर बनेगा बेटा
4. कर लो जिनवर की पूजन
5. जिनधर्म की कहानियाँ
   (छः पौराणिक कहानियों का संकलन)
6. तोता तू क्यों रोता
7. छहढाला वीडियो (संपूर्ण – अर्थ सहित)
8. गाथा महापुराण की
9. नन्हे मुन्ने ज्ञायक हम
   (16 कविताओं की सचित्र पुस्तक सहित वीडियो)
10. भगवन बनने जन्मे हम
    (16 कविताओं की सचित्र पुस्तक सहित वीडियो)
11. पाठशाला चलें हम
12. तुम्हें वीर बनना है
13. शेर बना महावीर (सचित्र पुस्तक सहित एनिमेशन वीडियो)
14. आओ सीखें जैनधर्म (नव देवताओं और तीर्थंकरों का ज्ञान कराने वाला वीडियो)
15. मोक्षमार्गप्रकाशक (संपूर्ण ग्रन्थ ऑडियो के रूप में)
16. मुक्ति सोपान (गेम)
17. तीर्थंकर स्टीकर (गेम)

निर्देशन एवं परिकल्पना – विराग शास्त्री जबलपुर
निर्माता – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

प्रभावना हेतु 50 प्रतिशत छूट पर उपलब्ध

संपर्क – सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबाइल – 9300642434, 09373294684 E-mail - chehaktichetna@yahoo.com

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ चेतन बाग स्थित नंदीश्वर जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 5 से 12 मार्च तक किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. अमितजी मोदी विदिशा, पण्डित सचिनजी अकलूज, पण्डित मिश्रीलालजी, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण श्री सुधीरजी जैन (तहसीलदार) पांडुरना-छिन्दवाड़ा एवं शिविर उद्घाटन श्री एस.पी. जैन (एस.डी.ओ.) वन विभाग भोपाल द्वारा संपन्न हुआ। शिविर का आयोजन श्री नरेन्द्रकुमारजी शिक्षक एवं श्रीमती इन्द्रादेवी जैन देदामूढी परिवार खनियांधाना द्वारा कराया गया।

विधि-विधान का समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर के निर्देशन में पण्डित मुकेशजी कोठादार, श्री सचिनजी मोदी, पण्डित अंकितजी सरल शास्त्री, पण्डित आकाशजी चौधरी, श्री अभिषेकजी साव, श्री राजेशजी सिंघई, श्री अनिलजी पुरा के सहयोग से संपन्न कराये गये।

ऋषभदेव जयन्ती संगोष्ठी संपन्न

1. नई दिल्ली : यहाँ श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) कुतुब संस्थानिक क्षेत्र के जैन दर्शन विभाग द्वारा दिनांक 16 मार्च को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषभदेव जयन्ती संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता जैनदर्शन शोध संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक प्राचार्य श्री निहालचंदजी जैन थे। सभा की अध्यक्षता प्रो. शुद्धानंदजी पाठक ने की। स्वागत भाषण करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. वीरसागरजी शास्त्री ने कहा कि ऋषभदेव को पुरुदेव, आदिनाथ आदि नामों के साथ-साथ अन्य देशों तथा धर्मों में भी बाबा आदम, रेशेफ तथा बुल्गोद के नाम से जाना जाता है।

सभा का संचालन करते हुए डॉ. अनेकान्तजी जैन ने कहा कि मोहनजोदारो, हड़प्पा में जिन योगी की प्रतिमा प्राप्त हुई है वे ऋषभदेव ही हैं। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. कुलदीपजी ने किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रो. जयकुमारजी उपाध्ये ने किया।

2. जयपुर : यहाँ राजस्थान चैम्बर भवन में ऋषभदेव जयन्ती के अवसर पर दिनांक 16 मार्च को राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

'युग प्रवर्तक के रूप में ऋषभदेव एवं भरत चक्रवर्ती का योगदान' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में मुख्यवक्ता के रूप में डॉ. अनिलजी जैन (निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र, राज. विश्वविद्यालय) एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने अपने मार्मिक उद्बोधन में ऋषभदेव को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार से युग प्रवर्तक सिद्ध किया।

सभा की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 पी.सी. जैन (पूर्व संकाय अध्यक्ष कृषि महाविद्यालय, जोधपुर) थे।

कार्यक्रम का संयोजन श्री प्रकाशजी अजमेरा एवं श्री महेशचन्दजी चांदवाड़ ने किया।

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : यहाँ स्थापित आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के पंचम सत्र का शुभारंभ 25 जून 2012 से होने जा रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। साथ ही छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय में छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी 10वीं उत्तीर्ण छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते पर पत्र डालकर या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। महाविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया 13 मई से 30 मई 2012 तक सागर (म.प्र.) में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क सूत्र - पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 9785643203, 8104615220, पण्डित रतन चौधरी, मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता -** कुंदकुंद कहान छात्रावास, 382, राजीव गांधीनगर, कोटा (राज.)

2. खनियांधाना (म.प्र.) : श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.) में कक्षा 6वीं से 10वीं तक पंचवर्षीय पाठ्यक्रम में कक्षा 5वीं उत्तीर्ण छात्र के प्रवेश हेतु दिनांक 8 से 10 अप्रैल तक छात्र चयन शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें अपने बालकों को सम्मिलित कर योग्यता के आधार पर प्रवेश दिला सकते हैं।

संपर्क सूत्र - प्राचार्य - 081200-90066,
अध्यक्ष-09584586077, प्रचारमंत्री-09977644295

आगामी कार्यक्रम...

1. ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) में दिनांक 21 से 23 अप्रैल तक 170 तीर्थंकर विधान, अकलंक महाविद्यालय का चतुर्थ दीक्षांत समारोह एवं उपकार दिवस मनाया जायेगा। इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। विधान के आमंत्रणकर्त्ता डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई है। **निवेदक :** ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट बांसवाड़ा, महिपाल ज्ञायक 9414103475, धनपाल ज्ञायक 9414101432

2. मुम्बई में पार्ले जिनमंदिर का शिलान्यास दिनांक 16 अप्रैल 2012 को होने जा रहा है। सभी साधर्मीजन कार्यक्रम में पधारकर अवश्य लाभ लेवें। **निवेदक :** श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, पार्ले-सांताक्रूज, मुम्बई।

हार्दिक बधाई !

1. जयपुर (राज.) निवासी चि. अनुज जैन शास्त्री पुत्र श्री अजितकुमार जैन का विवाह सौ. रुचि पुत्री श्री शिवलालजी के साथ दिनांक 25 फरवरी को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. कोटा (राज.) निवासी श्री शांतिलालजी सोगानी महिदपुर के सुपौत्र चि. राहुल सोगानी पुत्र श्री प्रद्युम्नजी सोगानी का विवाह श्री अरिदमनलालजी कोटा की सुपौत्री सौ. अनुभूति पुत्री श्री विजयकुमारजी जैन के साथ दिनांक 17 फरवरी 2012 को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में 1100 रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुये।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से दोनों परिवारों को हार्दिक बधाई !

चैतन्यधाम विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

91 पच्चीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सात तत्त्वों के श्रद्धान बिना अकेले आत्मा का श्रद्धान संभव ही नहीं है और जिसे अपने आत्मा का परिज्ञानपूर्वक सम्यक्श्रद्धान है, उसे सात तत्त्वों का ज्ञान-श्रद्धान होता ही है।

इसीप्रकार जिसे तत्त्वों का ज्ञान-श्रद्धान है, उसे स्व-पर भेदविज्ञान होता ही है और जिसे सही रूप में स्व-पर भेदविज्ञान है, उसे भी तत्त्वार्थों का ज्ञान-श्रद्धान होता ही है।

यदि यह बात है तो फिर ऐसा क्यों लिखा कि हमें नौ तत्त्व की संतति वाला सम्यग्दर्शन नहीं चाहिए ?

नौ तत्त्व संबंधी विकल्पों को तोड़कर निर्विकल्प होने की भावना से ऐसा कहा है। नौ तत्त्वों का स्वरूप जानने के लिए जो अध्ययन, मनन, चिन्तन चल रहा था, विकल्प चल रहे थे; जब नौ तत्त्वों को भलीभाँति जान लिया तो फिर अब उन विकल्पों से क्या लाभ है ? अब तो उन्हें तोड़कर निर्विकल्प में जाना ही श्रेयस्कर है।

इसीप्रकार का कथन देव–गुरु–धर्म के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहने के संदर्भ में भी पाया जाता है; जो इसप्रकार है –

''सप्ततत्त्वों के श्रद्धान में अरहंतादिक का श्रद्धान गर्भित है; क्योंकि तत्त्वश्रद्धान में मोक्षतत्त्व को सर्वोत्कृष्ट मानते हैं, वह मोक्षतत्त्व तो अरहंत–सिद्ध का लक्षण है। जो लक्षण को उत्कृष्ट माने वह उसके लक्ष्य को उत्कृष्ट माने ही माने; इसलिए उनको भी सर्वोत्कृष्ट माना, और को नहीं माना; वही देव का श्रद्धान हुआ।

तथा मोक्ष के कारण संवर–निर्जरा हैं, इसलिए इनको भी उत्कृष्ट मानता है; और संवर–निर्जरा के धारक मुख्यत: मुनि हैं, इसलिए मुनि को उत्तम माना, और को नहीं माना; वही गुरु का श्रद्धान हुआ।

तथा रागादिक रहित भाव का नाम अहिंसा है, उसी को उपादेय मानते हैं, और को नहीं मानते; वही धर्म का श्रद्धान हुआ।

इसप्रकार तत्त्वश्रद्धान में गर्भित अरहंतदेवादिक का श्रद्धान होता है।

अथवा जिस निमित्त से इसके तत्त्वार्थश्रद्धान होता है, उस निमित्त से अरहंतदेवादिक का भी श्रद्धान होता है। इसलिए सम्यक्त्व में देवादिक के श्रद्धान का नियम है।''[१]

''इसलिए जिसके जीवादिक तत्त्वों का श्रद्धान नहीं है, उसके अरहंतादिक का भी सच्चा श्रद्धान नहीं है। तथा मोक्षादिक तत्त्व के श्रद्धान बिना अरहंतादिक का माहात्म्य यथार्थ नहीं जानता।

लौकिक अतिशयादि से अरहंत का, तपश्चरणादि से गुरु का और परजीवों की अहिंसादि से धर्म की महिमा जानता है, सो यह पराश्रितभाव हैं।

तथा आत्माश्रित भावों से अरहंतादिक का स्वरूप तत्त्वश्रद्धान होने पर ही जाना जाता है; इसलिए जिसके सच्चा अरहंतादिक का श्रद्धान हो उसके तत्त्वश्रद्धान होता ही होता है – ऐसा नियम जानना।[१]''

यद्यपि जीवादि तत्त्वों में देव–गुरु–धर्म आ जाते हैं, तथापि गृहीत मिथ्यात्व के निषेध के लिए उनकी श्रद्धा को भी सम्यग्दर्शन कहा है।

जहाँ कुदेव–कुगुरु–कुधर्म नहीं है, इसकारण गृहीत मिथ्यात्व भी नहीं होता; वहाँ इसके प्रतिपादन की आवश्यकता नहीं है, किन्तु इस क्षेत्र और इस काल में इनकी अधिकता होने से तत्संबंधी सावधानी अत्यन्त आवश्यक है।

स्वर्ग, नरक या विदेहादिक क्षेत्रों में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की प्रवृत्ति न होने से वहाँ गृहीत मिथ्यात्व की मुख्यता नहीं है; पर भरतक्षेत्र में वर्तमानकाल में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की प्रवृत्ति विशेष होने से यहाँ देव–गुरु–धर्म संबंधी सही निर्णय होना अत्यन्त आवश्यक है।

देहादिक में एकत्वादि बुद्धिरूप अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यात्व ही वास्तविक मिथ्यात्व है, कुदेवादिक संबंधी मान्यतवाला गृहीत मिथ्यात्व तो उक्त अनादिकालीन मिथ्या मान्यता का पोषक होने के कारण मिथ्यात्व है।

यही कारण है कि यहाँ गृहीत मिथ्यात्व छोड़ने पर अधिक जोर दिया जाता है; क्योंकि गृहीत मिथ्यात्व छूटे बिना अगृहीत मिथ्यात्व छूटता ही नहीं है।

'सम्यग्दर्शन की उक्त परिभाषाओं का किस क्रम से विचार किया जाना चाहिए' – इसप्रकार का प्रश्न उपस्थित होने पर पण्डितजी कहते हैंह्न

''पहले तो देवादिक का श्रद्धान हो, फिर तत्त्वों का विचार हो, फिर आपापर का चिंतवन करे, फिर केवल आत्मा का चिंतवन करे ह्न इस अनुक्रम से साधन करे तो परम्परा सच्चे मोक्षमार्ग को पाकर कोई जीव सिद्धपद को भी प्राप्त कर ले।

तथा इस अनुक्रम का उल्लंघन करके, जिसके देवादिक की मान्यता का तो कुछ ठिकाना नहीं है और बुद्धि की तीव्रता से तत्त्व–विचारादि में प्रवर्तता है; इसलिए अपने को ज्ञानी जानता है अथवा तत्त्वविचार में भी उपयोग नहीं लगाता, आपापर का भेदविज्ञानी हुआ रहता है; अथवा आपापर का भी ठीक नहीं करता, और अपने को आत्मज्ञानी मानता है। सो यह सब चतुराई की बातें हैं, मानादिक कषाय के साधन हैं, कुछ भी कार्यकारी नहीं है।

इसलिए जो जीव अपना भला करना चाहे, उसे जबतक सच्चे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति न हो, तबतक इनको भी अनुक्रम से ही अंगीकार करना।[२]''

---

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३२६

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३२६ २. वही, पृष्ठ ३२८

देखो, यहाँ पण्डितजी कहते हैं कि देव-गुरु-धर्म का सही स्वरूप समझे बिना तत्त्वविचारादि में लगकर अपने को ज्ञानी मानना; तत्त्वविचार में भी उपयोग नहीं लगाना और स्वयं को भेदविज्ञानी समझना; अथवा स्व-पर में भेदविज्ञान बिना ही स्वयं को आत्मज्ञानी मानना - ये सब चतुराई की बातें हैं, मानादिक कषायों की पोषक बाते हैं, इनसे कुछ भी होनेवाला नहीं है। **चतुराई की बातें** - इस व्यंग्योक्ति में बहुत गंभीर भाव भरा है। इसके माध्यम से वे यह कहना चाहते हैं कि इसप्रकार की प्रवृत्ति न केवल दूसरों को ठगने की वृत्ति है, अपितु स्वयं को भी गफलत में रखने की बात है।

वर्तमान में भी ऐसे लोग प्राप्त होते हैं कि जिन्हें न तो देव-गुरु-धर्म के बारे में कुछ विवेक है, न सही रूप में तत्त्व ही समझते हैं, स्व और पर की भी सही पहिचान नहीं है; फिर भी स्वयं को आत्मज्ञानी मानते हैं, दूसरों से स्वयं को आत्मज्ञानी मनवाते हैं, दूसरों को आत्मज्ञान देने का ढोंग करते हैं, उन्हें आत्मज्ञानी घोषित करते हैं। इसप्रकार गृहीत मिथ्यात्व का वातावरण निर्मित करते हैं। पण्डित टोडरमलजी के जमाने में भी कुछ लोग ऐसे रहे होंगे। यही कारण है कि उन्होंने यह सब कुछ लिखा है।

पण्डितजी का मार्गदर्शन एकदम स्पष्ट है कि यदि तुम अपना भला चाहते हो तो जबतक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति न हो, तबतक उपरिलिखित क्रम से ही प्रयास करो। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का राजमार्ग यही है।

एक भाई कहने लगे कि जब हम तत्त्व की बात सही समझते हैं, पर और पयार्य से भिन्न आत्मा की बात भी हमारे ख्याल में है और त्रिकाली ध्रुव आत्मा में ही हमारा अपनापन है, हम निरंतर उसी का ध्यान भी करते हैं; तो फिर इससे क्या फर्क पड़ता है कि हम किस मंदिर में जाते हैं, किसकी पूजा करते हैं या किस गुरु को मानते हैं। हम तो सब जगह जाते हैं, सबकी सुनते हैं; इससे आत्मानुभव का क्या संबंध है ?

ऐसे लोगों का यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि सच्चे देव-गुरु-धर्म के बारे में सही निर्णय होना अत्यन्त आवश्यक है, सभी को एक समान मानना, सभी की समान विनय करना विनय मिथ्यात्व है। इसलिए तत्त्वार्थश्रद्धान, आत्मानुभूति और भेदविज्ञान के साथ-साथ सच्चे देव-गुरु-धर्म का निर्णय भी अत्यन्त आवश्यक है, व्यवहारिक विवेक भी अत्यन्त आवश्यक है।

इसके बाद सम्यग्दर्शन के भेदों की चर्चा की गई है। भेदों में सबसे पहले निश्चय सम्यग्दर्शन और व्यवहार सम्यग्दर्शन की बात है। उसके बाद आज्ञा सम्यक्त्व आदि दस भेदों की चर्चा की गई है।

तदुपरान्त औपशमिक सम्यग्दर्शन, क्षयोपशमिक सम्यग्दर्शन और क्षायिक सम्यग्दर्शन का निरूपण किया गया है। अन्त में सम्यक्त्वमार्गणा की अपेक्षा कहे जानेवाले छह प्रकारों की चर्चा है।

इसके बाद सम्यग्दर्शन के नि:शंकादि आठ अंगों की सामान्य चर्चा है। तदुपरान्त सम्यग्दर्शन के २५ दोषों के बारे में इतना कहा कि शंकादिक आठ दोष, आठ मद, तीन मूढ़ता, षट् अनायतन ह्न ये २५ दोष सम्यक्त्वी के नहीं होते हैं। इसके बाद बहुरि शब्द भी पूरा नहीं लिख पाये। बहु...लिखकर रह गये कि राजा के सिपाहियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे विरोधियों के षड्यंत्र के शिकार हो गये।

उन्होंने मोक्षमार्गप्रकाशक के पाँचवें, छठवें एवं सातवें अधिकार में गृहीत मिथ्यात्व की जिस निर्भीकता से चर्चा की, धर्म के नाम पर चलने वाली असत् प्रवृत्तियों का सशक्त प्रतिरोध किया; उससे धर्म के नाम पर धंधा करनेवालों के पैर उखड़ गये, उन्हें अपना अस्तित्व खतरे में लगने लगा; इसकारण उन लोगों ने जो कुछ किया, उसी के परिणाम में यह सबकुछ हुआ है।

पण्डितजी ने अपनी जान की बाजी लगाकर यह मोक्षमार्गप्रकाशक हमें दिया है। हमारा कर्त्तव्य है कि इसका अध्ययन कर वस्तुस्वरूप समझकर गृहीत मिथ्यात्व से स्वयं को बचायें ही, यदि संभव हो तो इस संदर्भ में अन्य लोगों का मार्गदर्शन भी करें।

ग्रंथ के आरंभ में पण्डित टोडरमलजी ने मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डालने की प्रतिज्ञा की थी; यद्यपि उनके आकस्मिक निधन से वह पूर्ण नहीं हो सकी; तथापि यह मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ आज जिस रूप में जितना उपलब्ध है, मुमुक्षु भाइयों के मार्गदर्शन के लिए उतना पर्याप्त है। यदि इस ग्रंथ में प्रतिपादित विषयवस्तु और प्रतिपादन शैली का गहराई से अध्ययन किया जाय तो उसके आधार पर अन्य उपलब्ध जिनागम का मर्म भी आसानी से समझा जा सकता है। अत: सभी आत्मार्थी मुमुक्षु भाइयों का परम कर्त्तव्य है कि वे उपलब्ध मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का गहराई से अध्ययन करें। इसी मंगल भावना से इस सत्प्रयास से विराम लेता हूँ। ●

नवीन प्रकाशन

जयपुर (राज.) निवासी डॉ. दीपकजी जैन वैद्य एवं डॉ. मनीषा जैन द्वारा 'स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे' नामक पुस्तक का विमोचन जयपुर पंचकल्याणक के अवसर पर किया गया। इसकी कीमत 120 रुपये है।

सभी साधर्मी भाईयों के लिये यह मात्र 80 रुपये में उपलब्ध होगी। समस्त त्यागी, व्रती, ब्रह्मचारी भाई-बहिनों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध रहेगी। पुस्तक प्राप्ति हेतु **संपर्क करें** - वैद्य दीपक जैन, सी. 115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर-15 मो. 09352990108

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान

अब

प्रतिदिन आधा घंटा

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

अवश्य देखें

डॉ. भारिल्ल का 2012 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 30वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 0044-1923826135** **E-mail : bhimji@yahoo.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)** **E-mail : jdgudhka@intraport.co.uk**	2 से 6 जून
2.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902 insty@verizon.net**	7 से 13 जून
3.	लॉस एंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext. 8725** **E-mail : naresh.palkhiwala@westcov.org**	14 से 20 जून
4.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **E-mail : ashok_k_sethi@yahoo.com**	21 से 28 जून
5.	टोरंटो	**Sanjay Jain** **E-mail : sanjay.jain@opg.com**	29 जून से 5 जुलाई
6.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **E-mail : shahniranjan@hotmail.com** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056**	6 से 10 जुलाई
7.	सिंगापुर	**Ashok Patni 006596357834**	13 से 18 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

2 से 12 जून - **डलास**, 13 जून से 20 जून - **ह्यूस्टन**, 21 से 28 जून - **शिकागो**, 29 जून से 5 जुलाई - **टोरंटो**, 6 से 13 जुलाई - **मियामी**, 14 जुलाई से 25 जुलाई - **पिट्सबर्ग**।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. अहमदाबाद (गुज.) निवासी श्री चन्दुलाल कचरालाल शाह का दिनांक 25 जनवरी को 95 वर्ष की उम्र में अत्यन्त स्वस्थ अवस्था में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

2. अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्रीमतीबाई चौधरी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीचंदजी चौधरी का दिनांक 20 फरवरी को धर्मश्रवण करते हुए समताभाव से देहावसान हो गया।

आप एक धार्मिक महिला थीं। आपकी स्मृति में 11 लाख की राशि से श्रीमतीबाई लक्ष्मीचंद चौधरी पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना की गई। 225000 रुपये विभिन्न तीर्थों एवं शिक्षण संस्थाओं को दान देने की घोषणा की गई, जिसमें 11 हजार रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये। ज्ञातव्य है कि आप दीवानगंज भोपाल के ट्रस्टी श्री महेन्द्रकुमारजी जैन कोहेफिजा की मातुश्री हैं।

3. नातेपुते-सोलापुर (महा.) निवासी श्री रायचंदभाई दोशी का दिनांक 23 मार्च को 95 वर्ष की आयु में नियम सल्लेखनापूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत शांतपरिणामी एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में पं. शीतलजी दोशी एवं श्री श्रेयांसजी दोशी की ओर से 501/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

4. सोनगढ (गुज.) निवासी श्री प्रदीपभाई मनसुखलाल देसाई का दिनांक 3 मार्च को 59 वर्ष की आयु में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का प्रवचन सुनते-सुनते देहावसान हो गया।

आप गहन तत्त्वाभ्यासी थे। आपका जन्म सोनगढ में ही हुआ था। जीवन के अन्तिम 6 वर्ष आपने सोनगढ में ही बिताये।

5. दौसा (राज.) निवासी श्रीमती शकुन्तला देवी छाबड़ा धर्मपत्नी श्री माणकचंदजी छाबड़ा का दिनांक 11 जनवरी 2012 को 68 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत ही धार्मिक महिला थीं एवं दौसा नगर में चलने वाली स्वाध्याय आदि गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127